वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष :3 अंक : 144 | गुरुवार 21 सितम्बर 2023 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

बारिश का दौर थमा, अब बढ़ेगी गर्मी-उमस

जयपुर. कासं

राजस्थान में मौसम करीब-करीब साफ हो गया है। पूर्वी राजस्थान के साथ अब पश्चिमी राजस्थान में बारिश की गतिविधियां थम गई हैं। हालांकि मानसून का यह ब्रेक ज्यादा दिन तक नहीं रहेगा। 22 सितंबर से एक नया वेदर सिस्टम एक्टिव हो रहा है। इसके असर से प्रदेश में फिर से बारिश का दौर शुरू होने की संभावना है। बंगाल की खाड़ी में बन रहा यह सिस्टम धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा है। संभावना है कि 22 सितंबर से इस सिस्टम का असर राजस्थान के पूर्वी हिस्सों में देखने को मिलेगा। पिछले 24 घंटे की रिपोर्ट देखें तो बाड़मेर, गंगानगर, हनुमानगढ़, सिरोही, जैसलमेर और बीकानेर के कुछ एरिया में हल्की से मध्यम बारिश हुई। बाड़मेर के धोरीमन्ना में सबसे ज्यादा 73टट बरसात रिकॉर्ड की गई। हनुमानगढ़, गंगानगर एरिया में मंगलवार देर शाम तेज हवाओं के साथ कई स्थानों पर अच्छी बारिश देखने को मिली। बारिश से किसानों को बहुत नुकसान हुआ, यहां खेतों में कटी रखी कपास, मूंग, ग्वार की फसलें पानी में गीली होकर खराब हो गईं। पिछले कुछ दिनों से गंगानगर-हनुमानगढ़ एरिया में तेज बारिश और तेज हवाओं के कारण फसलों को जो नुकसान हुआ है, उसकी गिरदावरी करवाने के लिए विधायक ने मुख्यमंत्री अशोक गहलोत को पत्र लिखा है।

नीले घोड़े पर निकाली मोती डूंगरी गणेश की सवारी

चंद्रयान-3 और खाटूश्यामजी की झांकी सजाई, हाथी की सूंड पर डांस करते दिखे गणपति

जयपुर. कासं

मोती डूंगरी मंदिर से गणेश जी की शोभायात्रा निकाली गई। राज्यपाल कलराज मिश्र ने शोभायात्रा में शामिल मुख्य रथ की पूजा अर्चना कर रवाना किया। इस दौरान महंत कैलाश शर्मा भी मौजूद रहे। यह यात्रा मोती डूंगरी गणेश जी मंदिर से शुरू होकर मोती डूंगरी रोड, सांगानेरी गेट, जौहरी बाजार, बड़ी चौपड़, त्रिपोलिया बाजार, गणगौरी बाजार, ब्रह्मपुरी होते हुए गढ़ गणेश मंदिर पहुंचकर विसर्जित होती है। शोभायात्रा में शामिल हुए भक्तों के लिए मोती डूंगरी रोड, जौहरी बाजार, चांदपोल बाजार, छोटी चौपड़, गणगौरी बाजार सहित गढ़ गणेश मंदिर तक रास्ते में 500 से ज्यादा खाने-पीने के स्टॉल लगाए गए।

14 फीट के रथ में स्वर्ण मंडित चित्र विराजमान

महंत कैलाश शर्मा के बताया- ऋषि पंचमी पर मोती डूंगरी गणेश जी से 36वीं शोभायात्रा निकली। इसमें गणेश जी शोभायात्रा के रूप में नगर भ्रमण पर निकले। शोभायात्रा में करीब 86 झांकियां शामिल हुई, इनमें से 28 झांकियां इलेक्ट्रॉनिक थी। इन झांकियों को कोलकाता के कारीगरों ने तैयार किया। शोभायात्रा में सबसे पीछे मुख्य रथ में गणेश जी का स्वर्ण मंडित चित्र विराजमान हुए।

चंद्रयान-3 की झांकी मुख्य आकर्षण का केंद्र

इस शोभा यात्रा के मुख्य आकर्षण का केंद्र चंद्रयान-3 की झांकी रही। इस झांकी को

कर्तव्य युवा संगठन ने तैयार किया। इसे बनाने में 30 लोगों की टीम ने 20 दिन में तैयार किया। इस चंद्रयान में चंद्रमा के चक्कर लगाते हुए रोवर को दिखाया गया। वहीं इसरो से लॉन्चिंग पैड के जरिए चंद्रयान-3 की झांकी सजाई गई। इसमें अलग-अलग तरीके के कई प्लेनेट्स को दिखाकर एक ब्रह्मांड का स्वरूप देने की कोशिश की गई। चांद के दक्षिण भाग पर जिस जगह चंद्रयान-3 ने लैंडिंग की है, उसे शिव शक्ति पॉइंट नाम दिया गया था। इस झांकी में उस जगह को दिखाते हुए वहां भगवान शिव की प्रतिमा को लगाया गया। इसके साथ ही चंद्रयान-3 की उड़ान को भगवान हनुमान के साथ जोड़कर दिखाया गया। इसमें हनुमान जी की 12 फीट की प्रतिमा आशीर्वाद देते हुए दिखाई दी। चंद्रयान-3 की इस झांकी में चंद्रमा पर उतरे प्रज्ञान और रोवर को उसके काम करते हुए भी दिखाया गया। इसमें रोवर से प्रज्ञान निकलकर चांद पर अपने मूवमेंट करता दिखा। साथ ही साथ इसमें सोलर पैनल भी लगाए गए, जिस पर यह सिस्टम काम कर रहा था।

18 फीट के गणेश जी की झांकी 3 महीने में हुई तैयार

यात्रा संयोजक प्रताप भानु सिंह शेखावत ने बताया- इस शोभायात्रा में 18 फीट के गणेश जी की झांकी मुख्य आकर्षण का केंद्र रही। इस झांकी को जयपुर के ही कारीगरों ने तीन महीने में तैयार किया। इसके अलावा चंद्रयान-3, त्रिपोलिया गेट पर गणेश जी रिद्धी-सिद्धि के साथ, पृथ्वी पर नृत्य करते गणेश जी, बाल रूप गणेश जी पिता शिव की पीठ पर खेलते हुए, शेषनाग पर नृत्य करते हुए, गणेश जी रिद्धी-सिद्धि संग घूमर नृत्य करते हुए और कलयुग के नीले घोड़े पर विराजमान नजर आए।

जयपुर में ट्रांसपोर्ट नगर तक मेट्रो ले जाने की तैयारी

सीएम गहलोत 6 से ज्यादा प्रोजेक्ट की नींव रखेंगे, अंडरग्राउंड पार्किंग शुरू करेंगे

जयपुर. कासं

चुनाव से पहले जयपुर में कई प्रोजेक्ट्स का शिलान्यास और लोकार्पण होने वाला है। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत गुरुवार को जयपुर में बनकर तैयार कुछ प्रोजेक्ट्स का लोकार्पण करेंगे, जबकि कुछ नए प्रोजेक्ट की आधारशीला रखेंगे। इसमें सबसे प्रमुख मेट्रो रेल परियोजना के फेज 1-सी का शिलान्यास प्रमुख है। इसके अलावा टोंक रोड पर लक्ष्मी मंदिर तिराहे के पास बना अंडरपास, रामनिवास बाग में बनी अंडरग्राउंड पार्किंग को लोकार्पण करेंगे। इसके अलावा आगरा रोड पर बने

सिल्वन जैव विविधता वन का भी लोकार्पण किया जाएगा। इसके साथ ही श्री गोविंद देव मंदिर क्षेत्र का सौंदर्यीकरण, दिल्ली रोड पर ईदगाह क्षेत्र का सौंदर्यीकरण, टोंक रोड पर शिवदासपुरा, आगरा रोड पर कानोता और अजमेर रोड पर बालमुकुंदपुरा में बनने वाले सैटेलाइट हॉस्पिटल और राजस्थान हाईकोर्ट बिल्डिंग के सामने अंडरग्राउंड पार्किंग प्रोजेक्ट की आधारशीला रखेंगे।

ट्रांसपोर्ट नगर तक मिलेगी कनेक्टिविटी

मेट्रो के फेज-1 के सी पार्ट का मुख्यमंत्री अशोक गहलोत शिलान्यास करेंगे। ये ट्रैक बड़ी चौपड़ से ट्रांसपोर्ट नगर तक बनाया जाएगा, जो अंडरग्राउंड और एलिवेटेड होगा। बड़ी चौपड़ से ट्रांसपोर्ट नगर के बीच बनने वाली मेट्रो की दूरी कुल करीब 2.85 किमी है। इस दूरी में दो मेट्रो स्टेशन बनेंगे। पहला स्टेशन रामगंज तो दूसरा ट्रांसपोर्ट नगर होगा। 2.85 किमी की दूरी में बनने वाले फेज 1-सी में 0.59 किमी मेट्रो एलिवेटेड होगी तो 2.26 किमी में अंडरग्राउंड चलेगी।

जैन दस लक्षण धर्म विशेष

उत्तम आर्जव-त्यागें "मिथ्याचार"

विजय कुमार जैन राघौगढ़ (गुना)

जो जैसा है वैसा ही प्रकट करना नहीं चाहता। भीतर कुछ है, बाहर कुछ और दिखता है। व्यक्ति के जीवन में दोहरापन दिखाई पड़ता है, यह दोहरापन ही मायाचारी हैं यह ही निकृति है, कुटिलता है। इस कुटिलता के अभाव का नाम ही आर्जव धर्म है। उत्तम आर्जव का स्वरूप बताते हुए भगवती आराधना में कहा है - जो मन में हो उसे ही वाणी और व्यवहार में उतारना, मन-वन-काय से एक होना आर्जव धर्म है। इसके विपरीत कुटिलता अधर्म है। सरलता स्वर्ग का सोपान है तो कुटिलता नरक का पथ। जीवन के इस दोहरेपन को दूर करने का प्रयास करना चाहिये क्योंकि बहुरूपियापन व्यक्ति को कहीं का नहीं रहने देता। ऐसे व्यक्ति बहुत स्वार्थी होते हैं, अवसर को देखते ही अपना रूप बदल लेते हैं। ऐसे लोगों पर विश्वास नहीं किया जा सकता क्योंकि ये कब कैसा रूख अपना लें कहां जा नहीं सकता। मन, वचन और काय में एकरूपता महापुरूषों का लक्षण है तथा मन, वचन और काय की भिन्नता दुरात्मा की पहचान है। मन कुछ, वचन में कुछ, प्रकट में कुछ, ये कुटिलता दोहरापन है। इस दोहरेपन में खत्म करके मन, वचन, वाणी और व्यवहार में एकरूपता लाकर सरल बनने की आवश्यकता है। सरल बनने की बात बड़ी सरलता से सुनी और कहीं जा सकती है। सरलता सुनने समझने में जितनी सरल प्रतीत होती है, जीवन में उतारने में उतनी सरल नहीं है। कहा है सरल बन जाना कदाचित सरल है, पर सरल हो पाना बड़ा जटिल है। कुछ लोग सरल बनते हैं, कुछ दिखते है और कुछ वास्तव में सरल होते हैं। प्रयत्नपूर्वक स्वयं को सरल दिखाने वाले लोग इस संसार में बहुत है। किन्तु वास्तविक रूप में सरल हो जाने वाले लोग बहुत कम है। सरल वह है जिसके मन में सत्य के प्रति निष्ठा हो, जो सच्चाई के पथ पर चलने हेतु संकल्पित हो, जो ईमानदारी का जीवन जीने का आदी हो। शास्त्रों में चार प्रकार के लोग बताये गये हैं - (1) बाहर से सरल, भीतर से सरल प्रथम प्रकार के लोग अत्यंत सरल होते हैं। (2) बाहर से कुटिल भीतर से सरल दूसरे प्रकार के वे लोग है जो बाहर से कठोर और भीतर से सरल होते हैं। (3) बाहर से सरल और भीतर से कुटिल तीसरे प्रकार के मनुष्य वे होते हैं जो ऊपर से सरल दिखते है पर होते नहीं है। (4) बाहर भीतर से कुटिल चौथे प्रकार के व्यक्ति बाहर-भीतर से कुटिल होते हैं। कुटिलता उनकी नस-नस में भरी होती हैं वे कुटिलता की प्रति मूर्ति होते हैं। उनका जीवन बड़ा गूढ़ होता है। ऐसे लोग मरते-मरते भी कुटिलता नहीं छोड़ते। जैसे मदिरा का पात्र आग से तपाने पर भी शुद्ध नहीं होता, वैसे ही कुटिल हृदय व्यक्ति सौ बार तीर्थ स्नान करके भी शुद्ध नहीं होता। अतएव कुटिलता, मायाचारी और कपट पूर्ण व्यवहार से बचने का प्रयत्न करें। सरलता और सदाचार को अपने जीवन का आदर्श बनाकर चलें। तभी आत्म कल्याण होगा। यही उत्तम आर्जव है।

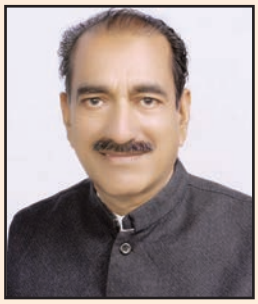

नोटः-लेखक स्वतंत्र पत्रकार एवं भारतीय जैन मिलन के राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष है।

आचार्य सौरभ सागर महाराज का 29 वां दीक्षा दिवस समारोह आज 21 सितम्बर को

पूरे देश से शामिल होंगे बड़ी संख्या में श्रद्धालु

जयपुर. शाबाश इंडिया। दिगम्बर जैन आचार्य पुष्पदंत सागर महाराज के शिष्य, जीवन आशा हॉस्पिटल के प्रेरणा स्त्रोत आचार्य सौरभ सागर महाराज का 29 वां दीक्षा दिवस समारोह गुरुवार, 21 सितंबर को श्रद्धा - भक्ति के साथ मनाया जायेगा। मुख्य समन्वयक गजेन्द्र बड़जात्या एवं जिनेन्द्र जैन जीतू ने बताया कि इस मौके पर वर्षायोग समिति द्वारा दोपहर 1.00 बजे से प्रतापनगर स्थित मुख्य पांडाल पर दीक्षा दिवस समारोह का भव्य आयोजन किया जायेगा। जिसमें राजधानी जयपुर ही नही बल्कि दिल्ली, यूपी, एमपी, हरियाणा, उत्तराखंड आदि राज्यों से हजारों की संख्या में श्रद्धालुगण सम्मिलित होंगे। कार्याध्यक्ष दुर्गा लाल जैन नेताजी ने बताया कि गुरुवार को प्रातः 5.15 बजे गुरुभक्ति, प्रातः 6.15 बजे जिनाभिषेक, शांतिधारा प्रातः 7 बजे से विधान पूजन, दोपहर मध्याह 1 बजे से पाद प्रक्षालन, शास्त्र भेंट, गुणानुवाद सभा और मंगल आरती का आयोजन होगा। समारोह में राजस्थान सरकार में मंत्री महेश जोशी, विधायक कालीचरण सराफ, उपमहापौर पुनीत कर्णावट, कांग्रेस के वरिष्ठ नेता संजय बापना, बाल आयोग सदस्या संगीता गर्ग, भाजपा जयपुर शहर पूर्व अध्यक्ष संजय जैन, राजस्थान जैन युवा महासभा के प्रदेश अध्यक्ष प्रदीप जैन, प्रदेश महामंत्री विनोद जैन कोटखावदा सहित अन्य गणमान्य श्रेष्ठिगण भी सम्मिलित होंगे और आचार्य श्री से आशीर्वाद प्राप्त करेंगे।

जैन मंदिर अठारह महाराज, पानों का दरीबा, सुभाष चौक में हुई उत्तम मार्दव धर्म की पूजा

जयपुर. शाबाश इंडिया। श्री दिगंबर जैन मंदिर अठारह महाराज, पानो का दरीबा, सुभाष चौक में हर्षोल्लास के साथ अभिषेक शांतिधारा की गई। इसके पश्चात उत्तम मार्दव धर्म की पूजन की गई। शर्मिला बिलाला ने बताया कि श्रेष्ठि सुरेंद्र बिलाला, विनोद बिलाला ने शांतिधारा कर पुण्यार्जन किया। मंत्री अनिल बिलाला ने बताया कि इस अवसर पर समाज के श्रेष्ठी कपिल पांड्या, राजीव बिलाला, कुसुम पांड्या, अर्पण बिलाला आदि उपस्थित थे।

हजारों श्रावक श्राविकाओं ने मन वचन और श्रद्धाभाव से एक दुसरे से गले मिलकर क्षमायाचना मांगी साहूकार पेट में

विश्व मैत्रिता और प्रेम मितव्ययता का महापर्व है, क्षमापना: महासती धर्मप्रभा

सुनिल चपलोत. शाबाश इंडिया

चैन्नई। विश्व मैत्री और मितव्ययता का पर्व है, क्षमापना। बुधवार साहूकारपेट जैन भवन मे क्षमायाचना समारोहो मे महासती धर्मप्रभा ने हजारों श्रध्दांलूओ को महामंगल पाठ प्रदान करतें हुए कहा कि क्षमा सभी धर्मों का आधार है,और क्षमा नफरत का निदान है। क्षमादान और क्षमा याचना दोनों ही महानता की निशानी हैं। समर्थवान मनुष्य ही क्षमा करना जानता है।जो दुर्बल होता वह कभी क्षमा नहीं कर सकता।क्षमा हमारे मन की कुंठित गांठों को खोलती है,और दया,सहिष्णुता, उदारता,संयम और संतोष को विकसित करती है। क्षमा याचना मानवता के लिए वो वरदान है।जिससे मनुष्य नामुमकिन काम भी मुमकिन बना सकता है परमात्मा को अपना सकता है क्षमा याचना भी एक तप के समान है,जिससे हमारे अशुम कर्म तो नष्ट होते है जीवन मे सदगुण आ जाते है। श्री संघ साहूकार पेट के कार्योध्यक्ष महावीरचन्द सिसोदिया ने जानकारी देतें हुए बताया क्षमायाचना दिवस के पावन अवसर पर चैन्नई महामनगर के कहीं उप नगरों एवं नगर के हजारों श्रध्दांलूओ के साथ एस. एस.जैन संघ साहूकारपेट के अध्यक्ष एम.अजित राज कोठारी,महामंत्री सज्जनराज सुराणा, एन. राकेश कोठारी, पदमचन्द ललवानी, सुरेश डूगरवाल, माणकचंद खाबिया, बादलचन्द कोठारी, जितेन्द्र भंडारी, शांतिलाल दरड़ा, महावीर कोठारी,देवराज लुणावत, मोतीलाल ओस्तवाल, शम्भूसिंह कांवडिया, अशोक सिसोदिया,अशोक कांकरिया, सुभाष काकलिया आदि पदाधिकारियों के साथ जय संस्कार महिला मंडल जैन संस्कार युवा मंच आदि सभी ने महासती धर्म प्रभा,साध्वी स्नेहप्रभा से सामूहिक रूप मे मिच्छामी दुकक्ड़म करते हुए सभी ने एक दुसरे से हांथ जोड़ कर और गले मिलकर विनम्र भाव से क्षमायाचना मांगी। क्षमावाणी से पूर्व अनेक भाईयो और बहनों आठ उपवास के साध्वी वृंद से प्रत्याख्यान लिए जिनका श्री संघ पदाधिकारियों ने शोल माला पहनाकर बहूमान किया ओर तपस्या की अनूमोदना की गई। क्षमापर्व के दिवस सागरमल कोठारी, राजेंद्र सिंघवी पृथ्वीराज वाघरेचा,जसराज सिंघवी, मोहनलाल बोहरा,दीपचंद कोठारी,रेखराज बाघमार,ललित मकाणा आदि गणमान्य अतिथीयों की उपस्थिति रही प्रवक्ता सुनिल चपलोत ने बताया कार्यक्रम का संचालन सज्जनराज सुराणा द्वारा किया गया।

माफ करना हमें, हाथ जोड़ कर मांगते हैं आपसे क्षमा

रूप रजत विहार में महासाध्वी इन्दुप्रभाजी म.सा. के सान्निध्य में सामूहिक क्षमायाचना

सुनील पाटनी. शाबाश इंडिया

भीलवाड़ा ।जीवन में क्षमा मांगना ओर क्षमा प्रदान करना महान कार्य है। क्षमादाता ओर क्षमायाचक दोनों ही शक्तिमान होते है। क्षमा मांगना ओर क्षमा करना कमजोर का काम नहीं है इसके लिए बहुत बड़ा दिल व अहोभाव की जरूरत होती है। जिनशासन के आराधकों में वह ताकत है जो उन्हें क्षमा मांगने व देने के लिए प्रेरित करती है। ये विचार आठ दिवसीय पर्युषण महापर्व के समापन पर बुधवार को चन्द्रशेखर आजादनगर स्थित रूप रजत विहार में श्री अरिहन्त विकास समिति के तत्वावधान में मरूधरा मणि महासाध्वी श्रीजैनमतिजी म.सा. की सुशिष्या महासाध्वी इन्दुप्रभाजी म.सा. के सान्निध्य में आयोजित सामूहिक क्षमायाचना कार्यक्रम में उभरकर सामने आए।इस दौरान साध्वी मण्डल एवं श्रावक-श्राविकाओं ने क्षमा का महत्व बताते हुए परस्पर क्षमायाचना की।साध्वी मण्डल से क्षमायाचना करने के लिए शहर के विभिन्न श्रावक संघों के प्रतिनिधि एवं विभिन्न क्षेत्रों से श्रावक-श्राविकाएं भी रूप रजत विहार पहुंचे। महासाध्वी इन्दुप्रभाजी म.सा. के साथ आगम मर्मज्ञा डॉ. चेतनाश्रीजी म.सा., मधुर व्याख्यानी डॉ. दर्शनप्रभाजी म.सा., तत्वचिंतिका डॉ. समीक्षाप्रभाजी म.सा., आदर्श सेवाभावी दीप्तिप्रभाजी म.सा., तरूण तपस्वी हिरलप्रभाजी म.सा. ने विचारों व गीतों के माध्यम से चातुर्मासकाल में किसी भी शब्द या कृत्य से हुई असाधना या भावना आहत होने के लिए क्षमायाचना की।

उत्तम मार्दव धर्म की विशेष आराधना की गई

दशलक्षण धर्म के दौरान दस धर्मों के कार्यक्रमों में भाग ले रहे हैं श्रद्धालु

विमल जोला. शाबाश इंडिया

निवाई। जैन मुनि शुद्ध सागर महाराज ने वर्षायोग के दौरान दस दिवसीय दशलक्षण धर्म के अन्तर्गत पर्युषण महापर्व के दूसरे दिन उत्तम मार्दव धर्म में धर्म सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि धर्म आराधना के दस भेदों के अन्तर्गत उत्तम मार्दव धर्म का दूसरा स्थान है। उन्होंने कहा कि मानसिक कोमलता का नाम मार्दव है। चित्त में कोमलता और व्यवहार में नम्रता होना मार्दव धर्म है। उन्होंने कहा कि मार्दव का अर्थ है मान कषाय का नाश करना एवं मार्दव की आधारशिला विनय है यह आत्मा का स्वाभाविक परिणाम है। इसी तरह क्षुल्लक श्री अकम्प सागर महाराज ने श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए कहा कि धर्म का अर्थ है दया से विशुद्ध होना। जिस प्रकार आधारशिला के अभाव में भवन का निर्माण होना जड़ के अभाव में वृक्ष की स्थिति होना, बादल मेघ के अभाव में जलवृष्टि होना असम्भव है उसी प्रकार दया के अभाव में मार्दव धर्म एवं सम्यगदर्शन की उत्पत्ति होना असम्भव है।

वेद ज्ञान

सेवा से ही मिलती है शांति

मनुष्य का एक ही मित्र है-धर्म। दूसरों को ईश्वर का अंश मानते हुए उनकी भलाई के लिए कार्य करना ही धर्म है। यदि कोई व्यक्ति किसी की सेवा करता है तो उसे परम संतोष और विशेष शांति मिलती है। सेवा के लिए मनुष्य के मन में सर्वप्रथम यही विचार आने चाहिए कि दुखी व्यक्ति भी अपना है और यदि यह दुखी रहेगा तो मैं भी दुखी रहूंगा। यानी जब हृदय में दया और अपनत्व का भाव होगा तभी हम सेवा के लिए तत्पर हो सकेंगे। किसी को ठंड में कंपकपाते हुए देखने पर हमारा शरीर भी उस ठंड को महसूस करेगा तब उस व्यक्ति के लिए कंबल की व्यवस्था करने का भाव हमारे मन में जाग्रत होगा। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। उसके चारों ओर उसके संबंधी और मित्रों आदि का समुदाय दृष्टिगोचर होता है। ऐसे में एक-दूसरे की मदद करना ही उनका कर्तव्य-धर्म है। खास बात यह कि सेवा से अहंकार का भी नाश होता है। अहंकार ईश्वर प्राप्ति में सबसे बड़ा बाधक है। सेवा का मतलब समर्पण है। समर्पण क्या है? एक बरगद ने ताउम्र लोगों की सेवा की। धूप होने पर लोग उसकी छाया में बैठते, जबकि त्योहारों पर महिलाएं उसकी पूजा करतीं। जब वृक्ष बूढ़ा हो गया तो वह सूखने लगा, उसकी जड़ें भी कमजोर हो गईं। लोग उसे काटने के लिए आरी, कुल्हाड़ी ले आए। उस बरगद के पास खड़ा एक नन्हा वृक्ष बोला, दादा ये कैसे स्वार्थी लोग हैं, जिन्होंने आपकी छाया ली, वे ही आज आपको काटने आ रहे हैं, क्या आपको गुस्सा नहीं आ रहा है। इस पर बूढ़े बरगद ने कहा, गुस्सा किस बात का? मैं यह सोचकर प्रसन्न हो रहा हूं कि मैं मरने के बाद भी इनके काम आ रहा हूं। यही समर्पण है कि हर हाल में अपने दिल में परोपकार की भावना रखना। अब सेवा में विश्वास को समझते हैं। सेवा कई तरह की होती है। कई बार व्यक्ति कामनायुक्त होकर सेवा करता है। यह सेवा दूसरे से लाभ लेने या फिर नुकसान पहुंचाने केलिए की जाती है। यह तामसिक सेवा कहलाती है, लेकिन जो निष्काम भाव से सेवा करता है तो वह सात्विक होती है, जिससे मोक्ष प्राप्त होता है। उदाहरणस्वरूप- रामायण काल में जटायु का बलिदान इसलिए महान बन गया, क्योंकि सीता की आर्त पुकार सुनकर सामर्थ्य न होते हुए भी उसने रावण से मोर्चा लिया और मोक्ष प्राप्त किया।

संपादकीय

विधायिका में महिलाओं की भागीदारी को बढ़ाना है...

राजनीति में महिलाओं की हिस्सेदारी बढ़ाने की सैद्धांतिक मांग पुरानी है। अपेक्षा की जाती थी कि राजनीतिक दल खुद महिलाओं को राजनीति में आगे लाएं और वे अपने दम पर अपनी जगह बनाएं। मगर यह विचार व्यावहारिक रूप लेता नहीं दिख पाया, तो सिफारिश की गई कि लोकसभा और विधानसभाओं में महिलाओं के लिए एक तिहाई सीटें आरक्षित कर दी जाएं। इसे लेकर मसविदा भी तैयार हुआ। संसद में उसे कानूनी दर्जा दिलाने की भी कोशिशें होती रहीं, मगर विभिन्न राजनीतिक दलों के विरोध के चलते इसे अमली जामा नहीं पहनाया जा सका। पिछले सत्ताईस सालों से यह विधेयक अधर में झूल रहा है। अब सरकार ने एक बार फिर इसे लोकसभा में पारित कराने का मन बना लिया है। विधेयक सदन में पेश कर दिया गया है। अगर इसे कानूनी दर्जा मिल गया तो लोकसभा में महिला सदस्यों की संख्या बढ़ कर एक सौ इक्यासी हो जाएगी। फिलहाल उनकी संख्या बयासी है। इसी तरह विधानसभाओं में भी महिलाओं की भागीदारी बढ़ जाएगी। प्रस्तुत विधेयक को केवल पंद्रह सालों तक लागू रखने का प्रस्ताव है। इसके बाद नए सिरे से इसे सदन में पारित कराना पड़ेगा। ऐसा इसलिए कि राजनीति में अगर महिलाओं की भगीदारी सशक्त होती है, तो शायद इस कानून की जरूरत ही न पड़े। लोकसभा में सरकार मजबूत स्थिति में है, इसलिए इस विधेयक के पारित होने में कोई अड़चन महसूस नहीं की जा रही। राज्यसभा में यह पहले ही पारित हो चुका है। फिर, इसकी मांग विपक्षी दल भी लंबे समय से कर रहे थे। संसद का विशेष सत्र शुरू हुआ तब भी सभी दलों की ओर से इस विधेयक को सदन में पेश करने की मांग उठी। कोई भी दल महिला आरक्षण के विरोध में कभी नहीं रहा है, बस मतभेद इसके मसविदे के बिंदुओं को लेकर उभरते रहे हैं। समाजवादी और वामपंथी दल इसका इसलिए विरोध करते रहे हैं कि हाशिये के कहे जाने वाले तबकों की महिलाओं के लिए इसमें कोई स्पष्ट रेखा तय नहीं की गई थी।

नए विधेयक में महिलाओं के लिए तय तैंतीस फीसद आरक्षण के भीतर अलग-अलग वर्गों की महिलाओं के लिए आरक्षण तय करने के बजाय लोकसभा और विधानसभाओं में अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति की खातिरआरक्षित सीटों में से ही तैंतीस फीसद महिलाओं के लिए आरक्षित करने का प्रस्ताव है। इसके अलावा अगर आरक्षित सीटों से बाहर भी महिलाएं चुनाव लड़ना चाहें तो लड़ सकती हैं। हालांकि अन्य पिछड़ी जातियों के लिए किसी प्रकार के आरक्षण की व्यवस्था नहीं है, इसलिए असल विरोध का स्वर वहीं से उठता रहा है। दरअसल, महिला आरक्षण का मकसद विधायिका में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाना है, इसलिए कुछ लोगों का विचार यह भी रहा है कि महिलाओं को आरक्षण के जरिए ही क्यों आगे आने का अवसर मिलना चाहिए, उन्हें अपने दम पर आगे आने का मौका देना चाहिए। इसलिए एक विचार यह भी आया कि राजनीतिक दल खुद अपने सांगठनिक ढांचे में एक तिहाई आरक्षण की व्यवस्था लागू करें।

-राकेश जैन गोदिका

परिदृश्य

रुपए में गिरावट...

किसी देश की अर्थव्यवस्था का आकलन इस बात से भी किया जाता है कि वहां की मुद्रा का मूल्य क्या है और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उसकी साख कैसी है। हालांकि कारोबार या अन्य स्थितियों में आने वाले उतार-चढ़ाव की वजह से कुछ समय के लिए मुद्रा की कीमतों पर असर पड़ सकता है, लेकिन अगर यह स्थिति ज्यादा वक्त तक बनी रहती है तो वह देश की अर्थव्यवस्था को प्रभावित करने वाली एक कारक बन जाती है। इस लिहाज से देखें तो भारतीय रुपए की कीमत में गिरावट का जो रुख बना हुआ है, वह चिंता की बात है और इसमें सुधार के लिए कोई रास्ता तत्काल निकालने की जरूरत है। गौरतलब है कि सोमवार को डालर के मुकाबले रुपए के मूल्य में ऐतिहासिक गिरावट दर्ज की गई, जिसके तहत रुपया 83.29 प्रति डालर तक नीचे आ गया। यों ''इंटरबैंक फारेन करंसी एक्सचेंज'' बाजार में अमेरिकी डालर के मुकाबले रुपए में इस उल्लेखनीय गिरावट के लिए कच्चे तेल की कीमतों में लगातार बढ़ोतरी को जिम्मेदार बताया जा रहा है। इसके अलावा, अंतरराष्ट्रीय बाजार में दूसरी मुद्रा की तुलना में डालर मजबूती के रुख पर है। इसका सीधा असर रुपए पर पड़ा है। कहने को भले आर्थिक स्थिति में लगातार बेहतरी का दावा किया जा रहा हो, लेकिन रुपए में गिरावट से कई आशंकाएं भी खड़ी हो रही हैं। दरअसल, मुद्रा के लगातार ऐसी स्थिति में बने रहने के नतीजे में अर्थव्यवस्था में सुधार की उम्मीदें कमजोर और मंदी की संभावनाएं भी खड़ी होने लगती हैं। हाल ही में सामने आए आंकड़े के मुताबिक देश में आयात और निर्यात, दोनों ही मोर्चे पर गिरावट दर्ज हुई है और एक तरह से इस मामले में निराशा हाथ लगी है। इसका स्वाभाविक असर रुपए की कीमत पर देखा जा रहा है। पिछले हफ्ते जारी सरकारी आंकड़ों में बताया गया कि अगस्त में भारत का निर्यात 6.86 फीसद घटकर 34.48 अरब डालर रह गया है जबकि बीते वर्ष इसी महीने यह आंकड़ा 37.02 अरब डालर का था। इसी तरह आयात में भी गिरावट आई और यह 5.23 फीसद घट कर 58.64 डालर रह गया। साल भर पहले इसी दौरान यह 61.88 अरब डालर का दर्ज किया गया था। किसी देश की मुद्रा की कीमत मांग और आपूर्ति पर आधारित होती है। वैश्विक पूंजी बाजार में जिस मुद्रा की ज्यादा मांग होगी, उसकी कीमत भी अधिक होगी। हालांकि अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियां कई बार मुद्रा की कीमतों पर असर डालती हैं, लेकिन यह पहले से ही आर्थिक मोर्चे पर संघर्ष कर रहे देशों को प्रभावित करती है। दुनिया में व्यापार के मामले में चूंकि अमेरिकी डालर एक खास जगह रखता है, इसलिए रुपए की कीमत में गिरावट को मुख्य रूप से इसी कसौटी पर आंका जाता है। फिलहाल, कच्चे तेल की बढ़ती कीमतों के साथ-साथ रूस और यूक्रेन के बीच जारी युद्ध की वजह से कारोबार पर असर पड़ा है। मगर केवल इसी कारण को रुपए के कमजोर होने के लिए जिम्मेदार नहीं माना जा सकता। आमतौर पर किसी भी देश की मुद्रा में गिरावट आना कई अन्य स्थितियों पर भी निर्भर करता है। मसलन, घरेलू और अंतरराष्ट्रीय बाजार में सिकुड़न आने या खरीदारी कम होने का सीधा असर मुद्रा की कीमतों पर भी पड़ता है। इसका मुख्य कारण लोगों की क्रय शक्ति घटना होता है, जिसके चलते निवेश भी प्रभावित होता है। ऐसे में अगर रोजगार के अवसर कमजोर होते हैं, तो अंदाजा लगाया जा सकता है कि इस सबका कुल नतीजा मुद्रा की तस्वीर पर और क्या पड़ सकता है!

जैन मंदिरों में उत्तम मार्दव धर्म की पूजन की गई

प्रवचन में अन्य धार्मिक कार्यक्रम हुए। संस्कार शिविर के शिविरार्थियो को घर भोजन कराने के लिए शिविरार्थी रहे कम लेकिन ले जाने वालों की संख्या अधिक

आगरा

दस लक्षण पर्व की बेला में आगरा नगर में एक अलौकिक संस्कार शिविर हो रहा है।जिसमें लगभग 4000 शिविरार्थी भाग ले रहे। यह संस्कार शिविर कई आयामों को ले रहा है लेकिन आगरा नगर ने अतिथि देवो भवों को चरितार्थ कर दिखाया है। सभी इन्हें घर पर स्नेह के साथ भोजन कराने के लिए अहो भाग्य मान रहे हैं और कह रहे अतिथि पधारे म्हारे देश।संस्कार शिविर के शिविरार्थी के आने को आगरा वासी यह सौभाग्य मान रहे है। मनोज जैन बाकलीवाल इन सभी के प्रति गदगद भाव से भरे हुए हैं और कह रहे हैं हम सभी उनके आभारी रहेंगे। वह कह रहे हैं इसी प्रकार के उद्गार कमलानगर के हर घर से आ रहे हैं, घर घर मे अतिथी लेकर जा रहे लोग। आज तो आलम यह था कि निमन्त्रण पर ले जाने वाले अधिक और अतिथी पड गये कम। यह आलम पूरे आगरा शहर का रहा वहीं बेलनगंज में आतिथ्य स्वागत के साथ भोजन कराया गया। इससे अधिक आगरा के अन्य स्थानों का वर्णन करें तो पश्चिमपुरी जैन मंदिर में शिवराथियो भव्य स्वागत किया गया।

दूसरे दिन बुधवार को मंदिर में उत्तम मार्दव धर्म की पूजन की

जैन समाज के दशलक्षण पर्व के दूसरे दिन बुधवार को मंदिर में उत्तम मार्दव धर्म की पूजन की गई आगरा के हरीपर्वत स्थित श्री 1008 शांतिनाथ दिगंबर जैन मंदिर के अमृत सुधा सभागार में मुनिपुगंव श्री सुधा सागर जी महाराज एवं क्षुल्लक श्री 105 गंभीरसागर जी महाराज ससंघ के मंगल सानिध्य में 30 वा श्रावक संस्कार शिविर का आयोजन चल रहा है। श्रावक संस्कार शिविर के दूसरे दिन का शुभारंभ शिविरार्थी ने

सुबह:धर्मध्यान एवं श्रीजी का अभिषेक और शांतिधारा के साथ किया,साथ ही सभी चार हजार शिविरार्थी ने मुनिश्री के मंगल सानिध्य एवं बाल ब्रह्मचारी प्रदीप भैया जी एवं बाल ब्रह्मचारी विनोद भैया जी बाल ब्रह्मचारी महावीर भैया जी के कुशल निर्देशन में मंत्रोच्चारण के साथ उत्तम मार्दव धर्म की पूजन की मांगलिक क्रियाएं संपन्न की मुनिश्री ने उत्तम मार्दव धर्म पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आज के दिन व्यक्ति को अपने मान का मर्दन कर देना चाहिए अहंकारी व्यक्ति का मान हमेशा घटता है वहीं विन्रम व्यक्ति का मान हमेशा बढ़ता है और कहा की समाज में जिस व्यक्ति की ज्यादा बुराई हो रही है वह व्यक्ति ज्यादा श्रेष्ठ होता है अतः बुराई से कभी न डरे जिस व्यक्ति के सबसे ज्यादा दुश्मन होते है वह जीवन में हमेशा आगे बढ़ता है शामः 6:00 बजे से मुनिश्री का जिज्ञासा समाधान कार्यक्रम आयोजित हुआ वही 7:00 बजे से सभी शिविरार्थी ने संगीतमय मुनिराज की मंगल आरती की गई मीडिया प्रभारी शुभम जैन के मुताबिक गुरुवार को श्रावक संस्कार शिविर के तीसरे दिन उत्तम आर्जव धर्म की पूजन की जाएगी शिविर में देशभर से गुरुवर के 4000 भक्त भाग ले रहे हैं धर्मसभा का संचालन मनोज जैन बाकलीवाल द्वारा किया गयो धर्मसभा में प्रदीप जैन पीएसी,नीरज जैन जिनवाणी, हीरालाल बैनाड़ा,निर्मल मोठया, पन्नालाल बैनाड़ा,राकेश सेठी,मीडिया प्रभारी शुभम जैन जगदीश प्रसाद जैन सुनील जैन ठेकेदार राकेश जैन पदेर्वाले,राहुल जैन,पंकज जैन यतीन्द्र जैन,शैलेन्द्र जैन,समस्त आगरा जैन समाज के लोग बड़ी संख्या में मौजूद रहे।

रिपोर्ट:
मीडिया प्रभारी शुभम जैन

जीवन में सरलता का विशेष महत्व है लेकिन सरल होना बहुत कठिन है

जैन धर्म में दशलक्षण पर्व का स्थान सर्वोपरि है। इन दिनों एक बच्चे से लेकर बड़े-बुजुर्ग तक सभी शारीरिक एवं आत्मिक शुद्धि के लिए सभी व्रत, उपवास, त्रिदिवसीय उपवास, पंचमेरू व्रत/उपवास, दस दिवसीय उपवास सामान्य दिनचर्या का अंग मानकर सहज ही धारण कर लेते है । दशलक्षण पर्व मन, वचन, एवं काय की शुद्धि का पर्व है । दशलक्षण के प्रथम तीन धर्म, भाव धर्म है । आर्जव धर्म मन की शुद्धता की व्याख्या करता है। सरलता, निष्कपटता, ऋजुता, सादगी आदि आर्जव है । जो मन में सोचे, वही बोले एवं उसी अनुरूप क्रियान्वित करे, अर्थात मन, वचन एवं कर्म की एकता,, एकरुपता ही आर्जव है। इसके विपरीत अन्यथा प्रपंच रहित, पाखण्ड रहित, कपट रहित गुण भी आर्जव है। जब किसी वस्तु, व्यक्ति अथवा स्थिति के प्रति तृष्णा जागृत होती है और आसक्ति बढ़ती है, तब उसे प्राप्त करने के प्रति हम संवेदनशील हो जाते है और उसे प्राप्त करने के लिए अनाधिकार चेष्टा करते है और बुरे से बुरा तरीका अपनाने पर उतारू हो जाते है। झूठ-फरेब, छल-कपट, प्रपंच- प्रवंचन, धोखाधड़ी, चौरी- डकैती आदि सब कुछ अपनाने लगते है। इन दुगुर्णों से मन की सहज सरलता खो। देते है। गलत-अदेय-अनावश्यक साध्य प्राप्त करने की आतुरता में साधनों की पवित्रता खो देते हैं। इसके विपरीत जब मन सहज, सरल, सामान्य रहता है तो सौम्य-स्वच्छ, मृदु- मधुर, शीतल- शांत रहता है । शरीर भी हल्का-फुल्का, पुलकित- रोमांच से भरा रहता है, स्पंदन की अनुभूति करते है। परिणामतः हम प्रीति-प्रमोद और सुख-सौहार्द से भर उठते है। हमारे आंतरिक सुख से मन प्रफुल्लित हो उठता है एवं मैत्री और करुणा के रूप में बाहर प्रकट होता है। इस प्रकार हम अपनी सुख-शांति औरों में भी बांटते है और आसपास के सारे वातावरण को प्रसन्नता से भर देते हैं। गांधीजी के तीन बंदर बुरा मत देखो, बुरा मत सुनो और बुरा मत बोलो के सिद्धांत को दर्शाते हें लेकिन इस सिद्धांत में समाहित तीन बुराइयों का त्याग करने की बजाय केवल एक बुराई - बुरा सोचना, जो की भावना पर आधारित है, को छोड़ने से उक्त तीनों बुराइयां स्वतः समाप्त हो जाती है । 'बुरा मत सोचो' एक व्यापक अर्थ वाला वाक्यांश है । स्पष्ट है जैन धर्म के अनुसार जीवन में भावना का समुचित महत्व है । जीवन में खुशी हमारी सोच की गुणवत्ता पर निर्भर करती है । सरलता जरा रोग नाशक, कर्म दहनक, मन वचन काय पर नियंत्रण करने वाली, दोष भाव रहित होती है। मायाचारी कभी परमात्म पद नहीं पा सकता है, उसके लिए माया का अभाव आवश्यक है। सरल मनुष्य ही आत्मानुभूति कर सकता है । संसार में यह स्थिति है कि मनुष्य का जीव माया की मूर्ति बना हुआ है, वह बाहर से कुछ और दिखाई देता है अंदर से कुछ और । उसी का नाम मायाचार है । मन में कुछ, वचन में कुछ, प्रकट में कुछ प्रवृत्ति ही मायाचारी है। अंतरंग निर्दोष होने से उत्तम आर्जव गुण प्रकट होता है। उत्तम आर्जव कपट मिटावे, दुर्गति त्याग सुगती उपजावे। निर्दोष सरलता से छल का नाश होता है, दुर्भाग्य का त्याग होता है और सुगति उत्पन्न हो जाती है। दशलक्षण महा पर्व के अवसर पर आज मात्र एक दिन के लिए ही अच्छी सोच रखने, विकसित करने - सरलता अपनाने से ही जीवन में आनंद की अनुभूति कर सकते है ।

संकलन : भागचंद जैन मित्रपुरा,
अध्यक्ष, अखिल भारतीय जैन बैंकर्स फोरम, जयपुर।

विवेक विहार जैन मंदिर में दश लक्षण महापर्व की हुई भव्य शुरुआत

जयपुर. शाबाश इंडिया

श्री आदिनाथ दिगंबर जैन मंदिर विवेक विहार में 10 दिवसीय दशलक्षण महापर्व की भक्तिमय शुरूआत हुई । समाज सचिव नरेश जैन मेड़ता ने बताया कि ब्रह्मचारिणी पूर्णिमा दीदी के निर्देशन में प्रातः काल 5:00 बजे ध्यान योग कार्यक्रम, 6:00 बजे से श्री जी के अभिषेक, 8:00 बजे ध्वजारोहण कार्यक्रम के बाद में दशलक्षण महापर्व मुख्य कलश विधान मंडल पूजा एवं शाम को सामूहिक आरती एवं ब्रह्मचारिणी पूर्णिमा दीदी एवं जय श्री दीदी के द्वारा प्रवचन, महिला मंडल के द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। दशलक्षण पर्व के संयोजक दीपक सेठी ने बताया कि 10 दिवसीय कार्यक्रम के अंतर्गत प्रथम दिन प्रातः काल श्री जी के अभिषेक करने के बाद ध्वजारोहण का कार्यक्रम पुण्यार्जक मुकेश मंजू सोगानी परिवार के द्वारा विधिवत मंत्रोचार से किया गया एवं इसके बाद दस दिवसीय दशलक्षण मंडल मुख्य कलश विधान पूजन के पुण्यार्जक भागचंद कांता देवी पाटनी परिवार के द्वारा विधानमंडल पर मंगल कलश की स्थापना की गई । संगीतकार संजय जैन लाडनूं एवं मनोज जैन ने भक्ति के शानदार भजनों की प्रस्तुति दी । इस अवसर पर मंदिर प्रागंण में सभी श्रावक श्राविकाऐ नृत्य करने के साथ ही भक्ति के रंग में रंग गए। सायंकाल सामूहिक महाआरती पुण्यार्जक भागचंद, संदीप, मोनु रारा परिवार नलबाड़ी के द्वारा की गई। ब्रह्मचारिणी पूर्णिमा दीदी एवं जय श्री दीदी ने अपने प्रवचन में 10 दिवसीय दशलक्षण पर्व के महत्व को बताया । इसके पश्चात सांस्कृतिक कार्यक्रम के अंतर्गत महिला मंडल के द्वारा मंगलाचरण की प्रस्तुति दी गई एवं पूर्णिमा दीदी के सानिध्य में धार्मिक प्रश्न मंच का आयोजन किया गया । प्रश्न मंच के प्रायोजक राजेश अनीता ,अरुण डोली रावंका परिवार के द्वारा इनाम वितरित किए गए । समाज अध्यक्ष अनिल जैन आईआरएस ने अपने उद्बबोधन में कहा समाज के सभी सदस्यगण सभी कार्यक्रमों में अपनी भागीदारी निभाएं। इस अवसर पर उन्होंने अरिहंत शालिनी बगड़ा परिवार द्वारा अखंड दीपक एवं मंडल स्थापना इंद्र आशिका मंदिर जी में दिए जाने पर समाज की ओर से आभार व्यक्त किया ।कार्यक्रम के अंत में सचिव सुरेंद्र पाटनी ने सभी का आभार जताया। इस अवसर पर कोषाध्यक्ष पारस छाबड़ा, अरुण पाटनी, नरेंद्र निखार ,सुबोध पहाड़िया, महेश जैन, शशि जैन, राजमती पाटनी, मैना कासलीवाल, अमित ठोलिया अनिल पाटनी, आशीष शाह, पंकज रारा,सजंय पापडीवाल, पदमचंद पाटनी,मनोज कासलीवाल, सौभागमल जैन, मुकेश सेठी, सुनील सरावगी, सुरेंद्र बुचरा, धर्मेंद्र गंगवाल, अशोक बाकलीवाल, जिनेंद्र छाबड़ा पदमचंद सौगाणी,असीम पतंगिया, ताराचंद छाबड़ा, धर्मचंद जैन, राजेश बधाल, प्रशांत सेठी, दीपक कासलीवाल, आयुष पाटनी, महिला मंडल अध्यक्ष सरला बगड़ा, सचिव अलका पांडया, कोषाध्यक्ष सुनीता कासलीवाल, रौनक बगडा, पूर्व पार्षद मोनिका जैन, अंजना काला, शौभा कासलीवाल, मोना सेठी,निक्कू रारा, सरिता पाटनी, ललिता छाबड़ा, स्वाति जैन, किरण पापड़ीवाल, शोभा शाह, निवेदिता पाटनी, सहित समाज के श्रावक श्राविकाऐ उपस्थित रहे ।

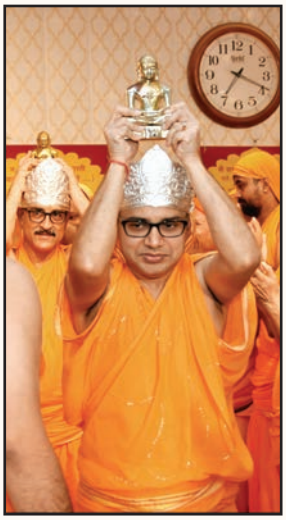

जनकपुरी जैन मंदिर में मार्दव धर्म की पूजन हुई

अभिमान के परिधान को तजना-मार्दव, धर्म राजस्थान जैन सभा ने किया आर्यिका श्री को श्रीफल भेंट

जयपुर. शाबाश इंडिया। जनकपुरी ज्योतिनगर जैन मंदिर में दस लक्षण पर्व के दूसरे दिन बालयोगिनी आर्यिका विशेष मति माताजी के सानिध्य में मार्दव धर्म की पूजा भक्ति भाव के साथ हुई । प्रबन्ध समिति अध्यक्ष पदम जैन बिलाला ने बताया कि प्रातः मण्डल पर विश्व शान्ति हेतु बीजाक्षर युक्त शान्तिधारा करने का सोभाग्य जिनेंद्र जैन, डा इंद्र कुमार जैन, राकेश व राजेंद्र ठोलिया को तथा वेदी पर महावीर पाटनी व राकेश बाकलीवाल को मिला। मन्दिर जी में नित्य पूजन विधान के साथ पंचमेरु की पूजन भी की गई। यह पूजन पाँच दिन की जाती है जिसमे पाँचों मेरु संबंधी अस्सी जिनधाम की सबे प्रतिमाओं को नमन किया गया है। राजस्थान जैन सभा के अध्यक्ष सुभाष पांड्या, महामन्त्री मनीष बैद, श्रेष्ठीजन अशोक नेता ,महेश काला तथा भानु छाबड़ा ने आर्यिका माताजी को वन्दामी कर सभा के एक अक्टूबर को होने वाले क्षमावाणी महोत्सव में आने हेतु श्रीफल भेंट कर निवेदन किया तथा समाज को अधिक से अधिक सहभागिता के लिए कहा। सभी अतिथियों का प्रबंध समिति ने अभिनंदन किया। आर्यिका श्री ने अपने प्रवचन में कहा कि मार्दव अर्थात मान एक प्रकार का जहर है । उन्होंने मान के तीन रूप सम्मान, स्वाभिमान व अभिमान को उदाहरण के साथ समझाया तथा कहा की—मान महाविषरूप, करहि नीच-गति जगत में । कोमल सुधा अनूप, सुख पावे प्राणी सदा।।

सीकरी जैन मंदिर में युवा परिषद् ने करायी कलश प्रतियोगिता, अनन्या रही प्रथम

सीकरी. शाबाश इंडिया। जैन मंदिर में दशलक्षण महापर्व बड़े धूमधाम से मनाया जा रहा है। अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन युवा परिषद् द्वारा मंगलवार शाम को कलश प्रतियोगिता करायी गई। युवा परिषद् के अध्यक्ष पुष्पेन्द्र जैन ने बताया कि समाज के सभी लोगों ने प्रतियोगिता में बढ़ चढ़ कर भाग लिया और धार्मिक भजनों से भक्ति भी करते रहे। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान अनन्या जैन, द्वितीय स्थान तनु जैन व तृतीय स्थान नैतिक खंडेलवाल ने प्राप्त किया। जिन्हें धर्मचंद जैन की तरफ से पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। इसके अलावा बुधवार प्रातः उत्तम मार्दव धर्म मनाया गया। जिसमें शांतिधारा करने का सौभाग्य अनूप जैन कोसी वालों को प्राप्त हुआ व सभी ने बड़े हर्षोल्लास के साथ उत्तम मार्दव धर्म की पूजन की।

जैन मंदिर त्रिवेणी नगर में उत्तम मार्दव धर्म की पूजा हुई

जयपुर. शाबाश इंडिया। श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर त्रिवेणी नगर में वीतराग दस लक्षण धर्म के दूसरे दिन उत्तम मार्दव पर्व भक्ति-भाव के साथ मनाया गया। मंत्री रजनीश अजमेरा ने बताया कि प्रातः भगवान के प्रथमः अभिषेक का सौभाग्य धर्मश्रेष्ठी सुनील संजीव लुहाड़िया परिवार को प्राप्त हुआ। वह शीला देवी छाबड़ा की पुण्यतिथि पर राकेश छाबड़ा द्वारा शांति धारा की गई। रात्रि में कार्यक्रम का दीप प्रज्जलन समाज सेवी नरेंद्र बज परिवार द्वारा किया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रम के अंतर्गत ''जिन शासन प्रश्नों का खेल खेल-खेल में मेल'' धार्मिक हाऊजी जितेंद्र जी- सुनीता कासलीवाल द्वारा खिलाई गई। पुरस्कार समाज सेवी नरेंद्र -निर्मला सेठी परिवार द्वारा दिया गया। समिति के अध्यक्ष महेन्द्र काला ने बताया कि इस अवसर पर राजस्थान जैन युवा महासभा के पदाधिकारी भी उपस्थित थे। मंदिर जी में दस लक्षण पर्व पर प्रतिदिन जय जिनेन्द्र प्रतियोगिता चल रही है जो कि शैलेन्द्र जैन, जितेन्द्र व नरेश कासलीवाल द्वारा कार्यक्रम किया जा रहा हैं। **संकलन : नरेश कासलीवाल**

लघुता से प्रभुता मिले, प्रभुता से प्रभु दूर : गुरु माँ विज्ञाश्री माताजी

गुंसी. शाबाश इंडिया। श्री दिगम्बर जैन सहस्त्रकूट विज्ञातीर्थ गुन्सी के तत्वावधान में आर्यिका विज्ञाश्री माताजी के ससंघ सान्निध्य में दशलक्षण महापर्व के शुभ अवसर पर श्री दशलक्षण महामण्डल विधान का आयोजन चल रहा है। उत्तम मार्दव धर्म पूजन के पुण्यार्जक परिवार बनने का सौभाग्य नरेंद्र संघी निवाई वालों ने प्राप्त किया। शांतिनाथ भगवान के चरण कमलों में भक्ति पूर्वक मंडल पर 11 अर्घ्य समर्पित किए गए। तत्पश्चात गुरु भक्तों ने मिलकर भगवान की मंगल आरती उतारीः शांतिप्रभु की अखंड शांतिधारा करने का सौभाग्य प्रमोद जैन जबलपुर , अरविंद ककोड वाले निवाई वालों को प्राप्त हुआ। माताजी ने धर्म सभा में उपस्थित धर्मप्रेमियों को संबोधित करते हुए कहा कि - बीज को वृक्ष बनने के लिए मिटना पड़ता है। बूंद को सागर बनने के लिए मिटना पड़ता है। उसी प्रकार भगवान बनने के लिए व्यक्ति को पहले मिटना पड़ता है। माताजी ने कहा-विनय ही मोक्ष का द्वार है जो व्यक्ति जितना झुकता जाएगा उतना ही ऊपर उठता जाएगा। कहा भी है-लघुता से प्रभुता मिले, प्रभुता से प्रभु दूर। अहंकारी व्यक्ति का कोई सम्मान नहीं। विनयवान का ही सम्मान होता है। रावण अहंकार के वशीभूत होकर नरक में चला गया तथा मयार्दा पुरुषोत्तम राम ने विजय प्राप्त की एवं विनय गुण से सबके दिलों को भी जीत लिया।

दस लक्षण पर्व पर हुई शांति धारा व विधान पूजन

नसीराबाद. शाबाश इंडिया

दिगम्बर जैन धर्मावलंबियों के दस लक्षण पर्व मंगलवार को प्रारंभ हुए। दस लक्षण पर्व के तहत अधिकांश जैन धर्मावलंबियों ने व्रत उपवास रखे। वहीं आर्यिका विज्ञानमति माताजी की शिक्षायाएं ब्रह्मचारिणी निधी दीदी एवं अर्चना दीदी के सानिध्य में जैन धर्मावलंबियों ने मुख्य बाजार स्थित आदिनाथ दिगंबर जैन बड़ा मंदिर में प्रातः कलशाभिषेक, शांतिधारा व दस लक्षण मंडल विधान में उत्तम क्षमा धर्म की पूजा की। संध्या में सामूहिक महाआरती, प्रवचन व प्रश्न मंच का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इसी प्रकार नगर के सभी जैन मंदिर में भी कलशाभिषेक, शांतिधारा व दस लक्षण विधान की पूजा की गई।

आपके विचार

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक राकेश जैन गोदिका द्वारा प्रकाशित दैनिक-ईपेपर 'शाबाश इंडिया' आम पाठक और समाज में जागरूकता फैलाने में सेतू का काम कर रहा है। आप अपने क्षेत्र के समाचार, आलेख, विचार आदि ई-मेल कर सकते हैं या निम्न नंबरों पर वाट्सअप कर सकते हैं।

सम्पादकः राकेश जैन गोदिका
@ 94140 78380, 92140 78380

दैनिक ई-पेपर
शाबाश इंडिया
shabaasindia@gmail.com
weeklyshabaas@gmail.com

श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन चैत्यालय
बी-21ए, गणेश मार्ग, बापू नगर, जयपुर

बापू नगर उत्तम आर्जव

बापू नगर महिला मण्डल द्वारा

जैन धार्मिक संगीतमयी तम्बोला

21 सितम्बर 2023
रात्रि 8.00 बजे

बापू नगर महिला मण्डल ....

कनक डंडिया — संस्थापक अध्यक्ष
सुरीला सेठी — अध्यक्ष
रेणु लुहाड़िया — सचिव
कमलेश बाकलीवाल — उपाध्यक्ष
राजकुमारी अजमेरा — सह-सचिव
रेणु जैन — कोषाध्यक्ष

कार्यकारिणी सदस्या : प्रमिला कासलीवाल, रीता जैन, शकुन जैन, रीमा गोदिका, उषा शाह
बीना बूचरा, रीतू कासलीवाल, इन्दु सौगानी, सुधा पाटनी, अंजू लुहाड़िया, कमलेश जैन

प्रस्तुति :
प्रख्यात पार्श्वगायिका,नारी गौरव
श्रीमती समता गोदीका

मुख्य अतिथि
श्रीमती रेणु जी लुहाड़िया
श्री सौरभ जी -श्रीमती मोनिका जी लुहाड़िया
श्री सम्यक् जी,आर्यन जी लुहाड़िया

... आप सादर आमंत्रित हैं ...

दशलक्षण महापर्व समारोह समिति

ताराचन्द पाटनी — अध्यक्ष
जितेन्द्र कुमार जैन — मंत्री
राजकुमार सेठी — उपाध्यक्ष
राजीव जैन गाजियाबाद — कार्याध्यक्ष
महावीर कुमार जैन झागवाले — संयुक्त मंत्री
सुरेन्द्र कुमार मोदी — कोषाध्यक्ष

कार्यकारिणी सदस्यगण... विजय दीवान • विनय कुमार छाबड़ा • शान्ति लाल गंगवाल • सुभाष पाटनी • सतीश बाकलीवाल

एवं समस्त प्रबन्ध कार्यकारिणी समिति, श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन चैत्यालय,गणेश मार्ग, बापू नगर, जयपुर

संजय पाटनी • रमेश बोहरा • मनोज झांझरी • राजेश बड़जात्या • रवि सेठी • श्रीमती सुरीला सेठी • धर्मेन्द्र लुहाड़िया • सतीश गोधा
राजकुमार जैन • शैलेन्द्र गोधा 'समाचार जगत' • श्रीमती सीमा जैन गाजियाबाद • श्रीमती ममता पाटनी
श्रीमती दीपाली संघी • श्रीमती ज्योत्सना काला • श्रीमती प्रीति झांझरी • श्रीमती अनामिका कटारिया • श्रीमती कीर्ति मोदी

94140-54571 / 93145-07553 / 93527-22022

॥ श्री पार्श्वनाथाय नमः ॥

श्री केसरिया पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर

जय नगर, केसर चौराहा, मुहाना मण्डी रोड, मानसरोवर, जयपुर

परमपूज्य गणाचार्य 108 श्री विमलसागर जी महाराज

अहिंसा परमो धर्म :

भव्य सजीव झांकी

रविवार दिनांक 24.09.2023

परमपूज्य गणिनी आर्यिका 105 श्री विज्ञाश्री माताजी

देख तमाशा लकड़ी का

झांकी संदर्भ

जीते भी लकड़ी, मरते भी लकड़ी, देख तमाशा लकड़ी का,
क्या जीवन क्या मरण, कबीरा, खेल रचाया लकड़ी का,
क्या राजा क्या रंक मनुष संत, अंत सहारा लकड़ी का,
कहत कबीरा सुन भई साधु, ले ले तम्बूरा लकड़ी का,
जीते भी लकड़ी मरते भी लकड़ी, देख तमाशा लकड़ी का ॥

झांकी उद्घाटनकर्ता

समाज श्रेष्ठी
श्रीमान् शैलेन्द्र जी-मनीषा जी
श्रीमान् संजय जी-खुशबू जी जैन

झांकी दीप प्रज्जवलनकर्ता

समाज श्रेष्ठी
श्रीमान् नरेन्द्र जी-मीना जी
अंशुल जी-समता जी
पष्टांश, गर्वित जैन

झांकी उद्घाटन एवं दीप प्रज्जवलन
समय : सांय 5.30 बजे

झांकी संयोजक : विनीत-विजेता छाबड़ा, जितेन्द्र-प्रियंका जैन, विनोद-प्रियंका पाटनी, भूपेन्द्र-रितु जैन, मोहित-आकांक्षा जैन, हेमन्त-सरिता जैन, कमलेश-कविता जैन, संजय-पूनम सेठी, प्रद्युम्न-अर्चना जैन, नरेश-सोनिया जैन, सुशील-शालू बाकलीवाल, अरूण-अतिका जैन, तरूण-रूबी जैन, प्रवीण-किरण पाटनी, अशोक-सुमन जी जैन (खेड़ली वाले), नीलेश-स्वाति जैन, पुखराज-वर्षा जैन, मनीष-श्वेता बाकलीवाल, भागचन्द-रेखा जैन,अनिल-रंजना जैन, अक्षय-श्वेता अजमेरा, क्षमा जैन एवं समस्त जैन समाज,केसर चौराहा

विशिष्ट अतिथि

श्री पुष्पेन्द्र भारद्धाज
समाज सेवक एवं जन प्रतिनिधि,
सांगानेर विधानसभा क्षेत्र

भोजन सहयोगकर्ता (सामूहिक गोठ)
समाज श्रेष्ठी श्रीमान् महावीर जी-मोना जी,
मोनू जी-पूजा जी, गौरव जी-साक्षी जी,
मयूर जी-सोनल जी, भरत, तिलक कासलीवाल

आगामी कार्यक्रम

रविवार दिनांक 1.10.2023 सम्मान एवं पुरस्कार वितरण, सामूहिक क्षमावाणी एवं गोठ समय दोपहर 1 बजे से

सभी साधर्मी बन्धुओं से निवेदन है कि अधिक से अधिक संख्या में पधारकर धर्मलाभ अर्जित करें।

निवेदक : श्री केसरिया पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर कार्यकारिणी समिति, केसर चौराहा, जयपुर
एवम् सकल दिगम्बर जैन समाज, केसर चौराहा, जयपुर

अध्यक्ष :
महावीर कासलीवाल मो. 9828011027

मंत्री :
नरेश जैन मो. 9414056487

MNP ELECTRONICS
Kesar Circle, 22 Iskon Road, Near Kesar Hotel, Mansarowar, Jaipur
Mob : 9782038786, 9982428386

SAREES, SUITS, JEWELLERY MATCHING CENTRE
SHREE PADMAWATI SAREES
OPP HP PETROL PUMP, NEAR GOVT. SCHOOL, ISKON ROAD, MANSAROWAR, JAIPUR

उत्तम मार्दव गुनमन माना, मानकरन कौ कौन ठिकाना...

दशलक्षण महापर्व का दूसरा दिनः वीतराग धर्म का उत्तम मार्दव लक्षण भक्ति भाव से मनाया- आज मनायेंगे वीतराग धर्म का उत्तम आर्जव लक्षण एवं जैन धर्म के सातवें तीर्थंकर भगवान सुपार्श्वनाथ का गर्भ कल्याणक दिवस। दिगम्बर जैन मंदिरों में होंगे विशेष आयोजन

जयपुर. शाबाश इंडिया। दिगम्बर जैन धर्मावलंबियों के चल रहे दशलक्षण महापर्व में दूसरे दिन वीतराग धर्म का दूसरा लक्षण उत्तम मार्दव भक्ति भाव से मनाया गया। इस मौके पर शहर के दिगम्बर जैन मंदिर परिसर जयकारों से गुंजायमान हो उठे। राजस्थान जैन युवा महासभा के प्रदेश महामंत्री विनोद जैन 'कोटखावदा' ने बताया कि दिगम्बर जैन मंदिरों में प्रातः श्री जी के अभिषेक, शांतिधारा के बाद दशलक्षण धर्म की विधान मंडल पर अष्ट द्रव्य से पूजा अर्चना की गई। चातुर्मास स्थलों पर संतो एवं विद्वानों ने उत्तम मार्दव पर प्रवचन दिया। जिसमें बताया गया कि 'मानमहा विषरुप, करहि नीच गति जगत में । कोमल सुधा अनूप, सुख पावे प्रानी सदा।। उत्तम मार्दव गुनमन माना, मानकरन कौ कौन ठिकाना।बस्यो निगोद माहि तै आया, दमरी रुंकन भाग बिकाया।।' ' अर्थात मान एवं घमण्ड बहुत ही तेज विष है, जो मनुष्य को नीच गति में ले जाता है। अतःमनुष्य को अपने जीवन में कभी भी मान व घमण्ड नही करना चाहिए। सायंकाल आरती एवं प्रतिक्रमण के बाद सांस्कृतिक आयोजन हुए। जैन के मुताबिक प्रतापनगर के सैक्टर 8 स्थित श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में आचार्य सौरभ सागर महाराज के सानिध्य में उत्तम मार्दव धर्म मनाया गया। इस मौके पर अपने प्रवचन में आचार्य श्री ने कहा कि जहां श्रेष्ठ मृदुता है, वहीं मार्दव धर्म है। अहंकार जीवन को कमजोर बनाता है, अतः इसका त्याग करना चाहिए।इस मौके पर गौरवाध्यक्ष राजीव जैन गाजियाबाद,आलोक तिजारिया, अध्यक्ष कमलेश बावड़ी, मंत्री महेंद्र पचाला सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालुगण शामिल हुए। विनोद जैन कोटखावदा के अनुसार तारों की कूंट स्थित श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में अध्यक्ष नवीन जैन, मंत्री धनेश सेठी के नेतृत्व में दशलक्षण महापर्व मनाया गया जिसमें प्रातः अभिषेक, शांतिधारा के बाद उत्तम मार्दव की पूजा की गई। सायंकाल महाआरती के बाद णमोकार महामंत्र के जाप तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम कलश चक्र का आयोजन किया गया। जिसमें श्रद्धालुओं को धर्म के सम्बन्ध में ज्ञान वर्धक जानकारी दी गई जैन के मुताबिक शांतिनाथ जी की खोह के श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र में समाजश्रेष्ठी विनोद जैन कोटखावदा, मनीष बैद एवं कमल वैद के नेतृत्व में दशलक्षण पूजा की गई। श्योपुर के श्री चन्द्र प्रभू दिगम्बर जैन मंदिर में दिव्या बाकलीवाल, अमिता साह के नेतृत्व में पूजा अर्चना की गई। चूलगिरि , जनकपुरी के दिगम्बर जैन मंदिरों में दशलक्षण महापर्व मनाया गया। जैन के मुताबिक गुरुवार 21 सितम्बर को वीतराग धर्म का उत्तम आर्जव लक्षण एवं जैन धर्म के सातवें तीर्थंकर भगवान सुपार्श्वनाथ का गर्भ कल्याणक दिवस मनाया जावेगा। प्रातः मंदिरों में अभिषेक, शांतिधारा के बाद दशलक्षण धर्म एवं भगवान सुपार्श्वनाथ की पूजा की जावेगी। जैन के मुताबिक दशलक्षण महापर्व गुरुवार 28 सितम्बर तक चलेगा । बुधवार से पुष्पांजलि व्रत शुरू हुए जो 24 सितम्बर तक चलेगे। 28 सितम्बर तक दशलक्षण व्रत किये जायेंगे। इस दौरान धर्म के 10 लक्षणों की पूजा आराधना की जावेगी । प्रतिदिन एक धर्म पर विशेष प्रवचन होगा। 22 सितम्बर को निर्दोष सप्तमी तथा 24 सितम्बर को सुगन्ध दशमी मनाई जावेगी । इस दिन मंदिरों में ज्ञान वर्धक तथा संदेशात्मक झांकियां सजाई जावेगी। 26 से 28 सितम्बर तक कर्म निझरा तेला, 27 से 29 सितम्बर तक रत्नत्रय व्रत व तेला किया जाएगा। 28 सितम्बर को अनन्त चतुर्दशी एवं दशलक्षण समापन कलश होगें । 30 सितम्बर को षोडशकारण समापन कलश एवं पड़वा ढोक क्षमा वाणी पर्व मनाया जावेगा। इस दौरान दिगम्बर जैन मंदिरों में पूजा अर्चना के विशेष आयोजन होगें।

विनोद जैन 'कोटखावदा':
प्रदेश महामंत्री

जैन मिलन मकरोनियाक द्वारा भजन प्रतियोगिता संपन्न

मनीष विद्यार्थी. शाबाश इंडिया

सागर। जैन मिलन मकरोनिया क्षेत्र क्रमांक 10 के तत्वावधान में दशलक्षण महापर्व के प्रथम दिन उत्तम क्षमा के अवसर पर श्री पारसनाथ दिगंबर जैन मंदिर अंकुर कॉलोनी में भव्य संगीत मय भजन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में आचार्य श्री के चित्र का अनावरण एवं दीप प्रज्वलन वीर अशोक जैन पटवारी अध्यक्ष टस्ट कमेटी एवं मुख्य संयोजक जैन मिलन, वीर सुरेश जैन अध्यक्ष, वीर सुरेंद्र जैन मालथौन मार्गदर्शक, वीर आकाश जैन बजाज ,वीर पं. उदय चंद्र शास्त्री, युवा वीर सुकुमार जैन एवं वीर रविंद्र जैन मंत्री ,वीर श्रेयांश सेठ कार्यकारी अध्यक्ष, अति वीर महेश जैन एसडीओ राष्ट्रीय संयोजक एवं इंजीआलोक जैन द्वारा किया गया। कार्यक्रम के प्रारंभ में वीरांगना रीता जैन द्वारा मंगलाचरण किया गया। इसके बाद प्रतिभागियों ने अपनी अपनी प्रस्तुति प्रस्तुत की जो की बड़ी ही मनमोहक कुंडलपुर के बड़े बाबा एवं आचार्य श्री पर आधारित थी ।

बरकत नगर जैन मंदिर में हुई उत्तम मार्दव धर्म

जयपुर. शाबाश इंडिया। स्थानीय बरकत नगर जैन मदिर में इस वर्ष निरन्तरता के क्रम में चौदवा बषायोग हेतु परम पूज्य आचार्य श्री नवीन नंदी जी महाराज का चातुर्मास सम्पन्न हो रहा है। वर्षायोग समिति में धार्मिक एवं सांस्कृतिक संयोजक सतीश जैन अकेला ने बताया कि मंदिर प्रबध समिति तथा वर्षायोग समिति के यशस्वी अध्यक्ष चक्रेश कुमार जैन को उनके समपर्ण ' धार्मिक प्रवृति तथा मुनि भक्ति को दृष्टि में रखते हुए पूज्य आचार्य श्री ने उन्हें श्रावक रत्न की उपाधि से विभूषित किया हैं। स्थानीय समाज मदिर प्रबध समिति अरिहन्त महिला मण्डल व समस्त विधान कताओं करतल ध्वनि से उक्त उपाधि के महिमा मंडित होने पर हर्ष विभोर होते हुए अनुमोदना की और एक प्रशस्ति पत्र प्रदान कर चक्रेश कुमार जैन को सम्मानित किया। इस अवसर पर सामूहिक क्षमा वाणी पर्व पर पधारने के लिए राजस्थान जैन सभा के अध्यक्ष सुभाष जी जैन . मंत्री मनीष वैद व कार्यकारिणी के भानूजी छावडा ने भी पूज्य श्री के पावन चरणो में श्रीफल अप्रित करते हुए श्रावक रत्न को शुभ कामनाए प्रेषित की। आज की पूजन विधान से पूर्व वृहद शान्ति धारा का सौभाग्य भी वर्षायोग पुण्यार्जक चक्रेश कुमार जैन को प्राप्त हुआ।

मान एक दुर्गुण हैं, जिसको महाविष की उपमा दी हैः मुनि श्री विशल्य सागर जी

भागलपुर. शाबाश इंडिया। दिगंबर जैन मंदिर,भागलपुर में विराजमान श्रमण मुनि श्री विशल्य सागर जी महाराज ने दस लक्षण पर्व के दूसरे दिन उत्तम मार्दव धर्म की व्याख्या करते हुए कहते है,मार्दव अर्थात मान (घमंड) तथा दीनता-हीनता का अभाव। वह मार्दव धर्म आत्मा के ज्ञान श्रद्धान सहित होता है, उसको ''उत्तम मार्दव धर्म'' कहते हैं। परम पूज्य मुनि श्री ने कहा कि मार्दव यानि मन की मृदुता, कोमलता, नम्रता,मधुरता। उन्होंने कहा कि मान एक दुर्गुण हैं, जिसको महाविष की उपमा दी है जिसका सेवन करने से मानवता की हत्या हो जाती हैं। इंसानियत मर जाती हैं। मान ऐसी कषाय हैं जो अपने को अपनो से दूर कर देती हैं। परम पूज्य मुनिराज कहते हैं ''अहं करोति इति अहंकार'', अर्थात अहम का भाव ही अहंकार है। अहंकार जीवन का सबसे बड़ा दुश्मन हैं। अहँकारी पुरुष मान कषाय के कारण दूसरे के प्रति झुकता नहीं। अहंकार समस्त विपदाओ का जड़ हैं।अहंकार विनाश का मूलाधार हैं। अहंकारी का कभी विकास नही होता। "I Am Something Special" यही अहंकार हैं। गुरुदेव अपनी प्रवचन में आगे कहते हैं रावण,कौरव और कंश का इतिहास देख लो उठा करके इन तिन्हो ने अभिमान किया जिसका परिणाम यह हुआ कि उन तिन्हों का वंश का विनाश हुआ। आखिर अहंकार से मिलता क्या हैं,शिवाय दुर्गति के।मुनिराज कहते हैं जब तक जीवन में दुगुर्णों का माइनस नहीं करोगे तब तक हमारे जीवन में वीतराग गुण का प्लस नहीं हो सकता। अंत में मुनिराज कहते हैं अभिमान की ताकत फरिश्तों को भी शैतान बना देती हैं और नम्रता साधारण को भी फरिश्ता बना देती हैं। वस्तुता अहंकारी अंधा भी होता हैं और बहरा भी। अतः अहंकार को छोड़ विनय को धारण करो,मधुरता लाओ, जीवन को मिठास से भरो और मानवता को गले लगाओ। आचार्यों ने कहा हैं विनय मोक्ष का द्वार हैं,जो विनय से रहित हैं उनका धर्म और तप व्यर्थ हैं। विनय जिनशाशन का मूल है। **प्रेषकःविशाल पाटनी,भागलपुर**

ब्यावर इंटेक द्वारा सम्मान समारोह का आयोजन

अमित गोधा. शाबाश इंडिया

ब्यावर। भारतीय संस्कृति निधि संस्थान के इंडियन नेशनल ट्रस्ट फॉर आर्ट एंड कक्चरल हेरिटेज INTECH के ब्यावर चैप्टर द्वारा होटल विक्रांत में सम्मान समारोह का आयोजन किया गया जिसमे INTECH के सभी पदाधिकारियों, सदस्यों एवं ब्यावर जिला स्तर पर क्विज कंपीटीशन में पुरुस्कृत रही स्कूल के विद्यार्थियों एवं अध्यापक अध्यापिकाओं ने भाग लिया। कार्यक्रम संयोजक डॉ नरेंद्र पारख को एक और मानद डॉक्टरेट डिग्री अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्राप्त होने पर संस्था के पदाधिकारियो द्वारा डॉ. पारख का माला, शॉल और पचरंगी साफा पहनाकर राजस्थानी परम्परा से स्वागत सम्मान किया गया। गरिमापूर्ण आयोजन में वरिष्ठ सदस्य एम.एम.मोदी ने डॉ पारख के विराट व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए उनकी विलक्षण प्रतिभा व गुणों की विवेचना की। कन्वीनर रामप्रसाद कुमावत ने शिक्षा के क्षेत्र में ब्यावर में बरसों से महसूस की जा रही रिक्तता को भरने की दिशा में डॉ. पारख के प्रभाव व प्रयासों को उल्लेखनीय उपलब्धी करार दिया और कहा कि नारी सशक्तिकरण की दिशा में लोकतांत्रिक मूल्यों को कायम रखते हुए शिक्षादान के प्रति जिस समर्पण भाव से वर्द्धमान शिक्षण संस्थान व समिति जुटे हुए हैं,इसकी दूसरी कोई मिसाल नहीं है। डॉ.पारख ने अपने

उदबोधन में बेबाकी से इस सत्य को उजागर किया कि वर्द्धमान शिक्षण समिति के सभी संस्थान मिशनरी भाव से ब्यावर जिले ही नहीं प्रदेश की प्रतिभाओं को निखारने हेतु दृढ़संकल्पित हैं क्योंकि जैन समाज के अहिंसक भामाशाह ज्ञान के आलोक को फैलाने का कार्य जीवदया की तरह अनिवार्य मानते हैं। उन्होने इन्टैक ब्यावर अध्याय द्वारा रखे सम्मान समारोह को यादगार और प्रेरक बताया तथा आभार जताते हुए कहाकि इससे उन्हें कला संस्कृति एवं धरोहर संरक्षण की दिशा में और अधिक सक्रियता से कार्य करने की शक्ति मिली है। समारोह में क्विज कॉम्पीटिशन की विनर टीम बी.एल.गोठी स्कूल के दोनो विद्यार्थियों तथा रनर टीम के.डी.जैन स्कूल के दोनो विद्यार्थियों सहित फाइनल राउण्ड हेतु चयनित चारों टीम को पुरस्कार वितरित किए गए। समारोह में क्विज कॉम्पीटिशन संचालन के प्रमुख सूत्रधार प्रिंसीपल एवं मानसिंह चौहान के सक्रिय सहयोग की भी सराहना कर उनका सम्मान किया गया। कार्यक्रम में श्याम शर्मा, बालकिशन गोठवाल, कृष्णकांत सिंहल को जन्मदिन की लाखों-लाख बधाइयाँ दी गई। साथ ही विदेश यात्रा से लौटे सदस्यगण सर्वश्रेष्ठ हरिभाई हेमलानी, पुष्पेंद्र कुमावत, नारायणलाल कुमावत का भी स्वागत किया गया। समारोह में सदस्य डॉ.एम.एल.शर्मा, अर्जुनलाल सांखला, को-कन्वीनर श्यामसुन्दर शर्मा, उत्तम भण्डारी, गोपाल डाणी, अशोक गोयल, हरि हेमलानी, सत्यनारायण अग्रवाल, दीपक गुप्ता आदि ने भी शुभकामनाएं व्यक्त की।अंत में रमेश यादव ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

श्री दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र चुलगिरी में भव्य दश लक्षण विधान का आयोजन

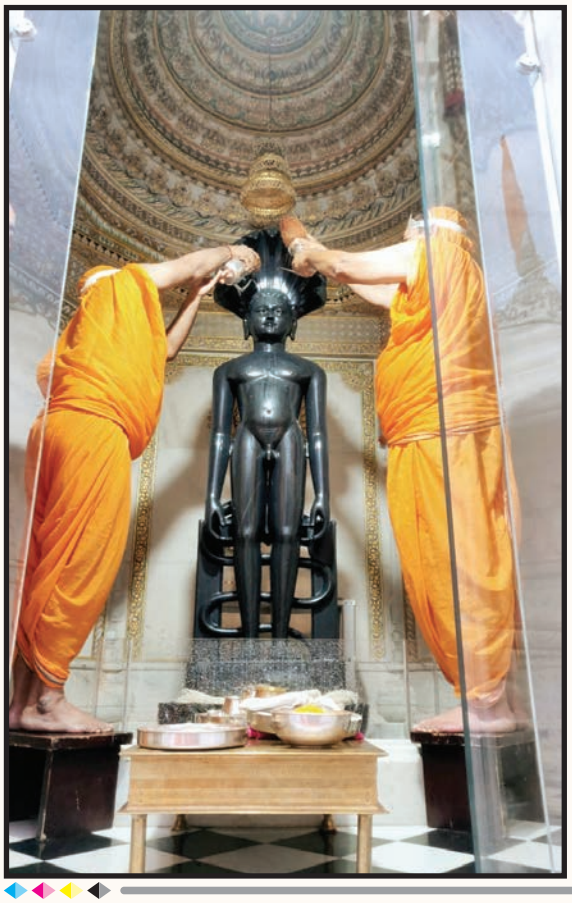

जयपुर. शाबाश इंडिया। श्री दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र चुलगिरी में भव्य दस लक्षण विधान का आयोजन हो रहा है। श्रेष्ठि हेमंत जैन ने बताया कि प्रातः 6 बजे से मूल नायक पार्श्वनाथ भगवान के अभिषेक शांतिधारा हुई उसके पश्चात दस लक्षण विधान के अंतर्गत उत्तम मार्दव धर्म की पूजा हुई । इस अवसर पर मूल नायक पार्श्वनाथ के प्रथम अभिषेक मौलिक जैन, अनिरुद्ध जैन, पांडुक शिला प्रथम अभिषेक शिवम जैन, संतोष बॉस, मूल नायक पार्श्वनाथ की शांति धारा नरेंद्र बड़जात्या,अतुल जैन, पांडुक शिला शांति धारा मनीष जैन ,पारस कासलीवाल ने की । 19 सितंबर से शुरू हुआ विधान 28 सितंबर तक प्रतिदिन प्रातः 6 बजे से प्रारंभ होगा।

1000 से अधिक शिवरार्थी शिविर में पहुंचे

राजेश जैन दद्दू. शाबाश इंडिया

बड़ौत। चर्या शिरोमणि आचार्य विशुद्ध सागर जी के सानिध्य में लगाए गये शिविर में इंदौर से भी एक दर्जन से अधिक श्रावक शिविर में सहभागिता भाग ले रहे हैं। राजेश जैन दद्दू ने बताया कि बहुत ही अद्भुत अकल्पनीय अविश्वसनीय ... बड़ौत के प्रथम श्रावक साधना संस्कार शिविर के आज दूसरे दिन चर्या शिरोमणि आध्यत्मिक योगी आचार्य भगवंत श्री 108 विशुद्ध सागर जी महाराज के चरणों में रहकर गृहत्याग, मोबाइल त्याग व अन्य परिग्रहों का त्याग कर गुरुकुल परंपरा पर आधारित दसलक्षण पर्व के अवसर पर आत्मसाधना में लीन शिवरार्थी। धर्म ध्यान कर अपने जीवन को सफल कर रहे हैं।

'उत्तम मार्दव विनय प्रकाशे, नाना भेद ज्ञान सब भासै' अर्घ चढ़ाते हुए उत्तम मार्दव धर्म की पूजा की

जयपुर. शाबाश इंडिया। नेमीसागर कालोनी स्थित जैन मंदिर में दसलक्षण महापर्व के दूसरे दिन उत्तम मार्दव धर्म की पूजन की गई। इस अवसर पर विधानाचार्य पंडित रमेश जैन ने मार्दव धर्म पर प्रकाश डालते हुए बताया कि उत्तम मार्दव अपनाने से मान व अहंकार का मर्दन हो जाता है और सच्ची विनयशीलता प्राप्त होती हैं। अध्यक्ष जे के जैन कालाडेरा ने बताया कि सांयकाल मे धार्मिक प्रश्नोत्तरी एवं धार्मिक फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता आयोजित की गई। पूजन स्थापना डी सी जैन द्वारा की गई। सायंकालीन आरती संतोष बाकलीवाल एवं परिवार द्वारा तथा दीप प्रज्जवलित पूनम चंद ठोलियां परिवार द्वारा किया गया। पुरस्कार वितरण के सी जैन एवं परिवार द्वारा किया गया।

दस लक्षण महापर्व तृतीय दिन 21 सितम्बर पर विशेष

आर्जव धर्म कथनी और करनी एक हो की सीख देता है

डॉ. सुनील जैन संचय
ज्ञान-कुसुम भवन,नेशनल कान्वेंट स्कूल के सामने,
गांधीनगर, नईबस्ती,ललितपुर 284403, उत्तर प्रदेश
मोबाइल, 9793821108
ईमेल- suneelsanchay@gmail.com
(आध्यात्मिक चिंतक व जैनदर्शन के अध्येता)

आर्जव धर्म का अर्थ है– मन, वाणी और कर्म की पवित्रता और यह पवित्रता ही किसी व्यक्ति को महान बनाती है। आर्जव धर्म – योगस्यावक्रता आर्जव। मन ,वचन ,काय लक्षण योग की सरलता व कुटिलता का अभाव उत्तम आर्जव धर्म हैं। जो विचार हृदय में स्थित हैं ,वही वचन में कहता है और वही बाहर फलता है ,यह आर्जव धर्म हैं। डोरी के दो छोर पकड़ कर खींचने से वह सरल होती है ,उसी तरह मन में से कपट दूर करने पर वह सरल होता है अर्थात मन की सरलता का नाम आर्जव हैं। महापुरुष जो कहते हैं, वही करते हैं, किन्तु कुटिल पुरुषों की कथनी और करनी में अन्तर होता है। यह मायाचार है। शास्त्रों में इसे त्याज्य बताया गया है। आज सर्वत्र मायाचार या छल–कपट का साम्राज्य है। आज धर्म के क्षेत्र में भी मायाचार देखा जा सकता है। इस धर्म का ध्येय है कि हम सब को सरल स्वभाव रखना चाहिए, मायाचारी त्यागना चाहिए। क्षमा और मार्दव के समान ही आर्जव भी आत्मा का स्वभाव है। आर्जवस्वभावी आत्मा के आश्रय से आत्मा में छल-कपट मायाचार के अभावरूप शांति-स्वरूप जो पर्याय प्रकट होती है, उसे भी आार्जव कहते हैं।यद्यपि आत्मा आर्जवस्वभावी है, तथापि अनादि से ही आत्मा में आर्जव के अभावरूप मायाकषायरूप पर्याय ही प्रकट से विद्यमान हैं ''ऋजोर्भावः आर्जवम्'' ऋजुता अर्थात सरलता का नाम आर्जव है। आर्जव के साथ लगा 'उत्तम' शब्द सम्यग्दर्शन की सत्ता का सूचक है। सम्यग्दर्शन के साथ होने वाली सरलात ही उत्तमआर्जव धर्म हैं उत्तमआर्जव अर्थात सम्यग्दर्शन सहित वीतरागी सरलता। आर्जवधर्म की विरोधी मायाकषाय है। मायाकषाय के कारण आत्मा में स्वभावगत सरलता न रहकर कुटिलता उत्पन्न हो जाती है। मायाचीर का व्यवहार सहज एवं सरल नहीं होता। वह सोचता कुछ है, बोलता कुछ है और करता कुछ है। उसके मन-वचन-काय में एकरूपता नहीं रहती। वह अपने कार्य की सिद्धि छल-कपट के द्वारा ही करना चाहता है। आर्जव के विपरित मायाचारी होती है। छल-कपट करना मायाचारी कहलाता है। यदि अपने जीवन में आर्जव को लाना चाहते हैं तो अपने छल-कपट अर्थात मायाचारी का त्याग करना होगा। इस धर्म का ध्येय है कि हम सब को सरल स्वभाव रखना चाहिए, मायाचारी त्यागना चाहिए। जैसा अपने मन में विचार किया जाये, वैसा ही दूसरों से कहा जाये और वैसा ही कार्य किया जाये। इस प्रकार से मन–वचन–काय की सरल प्रवृत्ति का नाम ही आर्जव है ।जहाँ पर कुटिल परिणाम का त्याग कर दिया जाता है वहीं पर आर्जव धर्म प्रगट होता है। आर्जव धर्म का अर्थ है– मन, वाणी और कर्म की पवित्रता और यह पवित्रता ही व्यक्ति को महान बनाती है। महापुरुष जो कहते हैं, वही करते हैं, किन्तु कुटिल पुरुषों की कथनी और करनी में अन्तर होता है। यह मायाचार है। शास्त्रों में इसे त्याज्य बताया गया है। आज सर्वत्र मायाचार या छल–कपट का साम्राज्य है। आजकल सभ्यता के नाम पर भी बहुत - सा मायाचार चलता है ,बिना लाग-लपेट के कहीं गई सच्ची बात तो लोग सुनना भी पसंद नहीं करते। यही भी एक कारण है कि लोग अपने भाव सीधे रूप में प्रकट न करे एड़े-टेड़े रूप में व्यक्त करते हैं। सभ्यता के विकास ने आदमी को बहुत-कुछ मिठबोला बना दिया है। आज के आदमी के लिए ऊपर से चिकनी-चुपडी बातें करना और अन्दर से काट करना एक साधारण-सी बात हो गई है। वह यह नहीं समझता कि यह मायाचारी दूसरों के लिए ही नहीं, स्वयं के लिए भी बहुत खतरनाक साबित हो सकती है, उसके सुख-चैन को भंग कर सकती है। भंग क्या कर सकती है, किए रहती है। जैनाचार्य कहते हैं कि -''योगस्यावक्रता आर्जवम्''। मन–वचन–काय की सरलता का नाम आर्जव है। ऋजु अर्थात सरलता का भाव आर्जव है। अर्थात मन–वचन–काय को कुटिल नहीं करना, इस मायाचारी से अनंतों कष्टों को देने वाली तिर्यंच योनि मिलती है जो बात मन में है, उसे ही वचन द्वारा प्रकट करना आर्जव है और उससे विरुद्ध मायाचार है, अधम है। अपनी मनः स्थिति को व्यक्त करना शुभ है, मन की बात छिपाकर बनावटी बात मुंह से कहना अशुभ का संकेत है। धर्म में प्रवेश करने के लिए इस मायाचार से मुक्त होना आवश्यक है। जो साधक मन में कुटिल विचार नहीं रखता, वचन से कुटिल बात नहीं कहता, शरीर से भी कुटिल चेष्टा नहीं करता तथा अपना दोष नहीं छिपाता, वही उत्तम आर्जव धर्म का पालक है। जितने सरल हम अपने जीवन में होते जाएंगे, उतने ही हम ईश्वरत्व के समीप होते जाएंगे। कोई भी व्यक्ति परमात्मा का भक्त तब तक नहीं हो सकता, जब तक उसमें मायाचार का अंश भी विद्यमान है। मायाचारी अपने कपट व्यवहार को कितना ही छिपाए, देर-सबेर वह प्रकट होता ही है। इसीलिए कहा गया है - नहीं छिपाए से छिपे, माया ऐसी आग, रुई लपेटी आग को, ढांके नहीं वैराग। आज का मानव बहुरूपिया है। उसका स्वभाव जटिलताओं का केंद्र बन गया है। रिश्तेदारों के साथ, अतिथियों तथा अड़ोस-पड़ोस में बसने वालों के साथ -हर किसी के साथ और हर स्थान पर वह छल से पेश आता है। यहां तक कि भगवान के आगे भी वह अपनी मायाचारी बुद्धि का कमाल दिखाए बगैर नहीं रहता। सभी को सरल स्वभाव रखना चाहिए, कपट को त्याग करना चाहिए। कपट के भ्रम में जीना दुखी होने का मूल कारण है । उत्तम आर्जव धर्म हमें सिखाता है कि मोह-माया, बुरे काम सब छोड़ -छाड़ कर सरल स्वभाव के साथ परम आनंद मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं।

दुगार्पुरा जैन मंदिर में दशलक्षण महापर्व उत्तम मार्दव धर्म की पूजा भक्ति भाव से हुई

जयपुर. शाबाश इंडिया

श्री दिगंबर जैन मंदिर चन्द्रप्रभ जी दुगार्पुरा, जयपुर में दशलक्षण महापर्व में दिनांक 20 सितंबर 2023 बुधवार को प्रातः 6.30 बजे मूल नायक श्री 1008 चन्द्रप्रभ भगवान जी के प्रथम अभिषेक शांतिधारा करने का पुण्यार्जन सुनील कुमार माया जैन संगही परिवार ने प्राप्त किया। दश लक्षण महा मण्डल पूजा के सोधर्म इन्द्र इंद्राणी महावीर कुमार भंवर देवी पाटनी रहे तथा महा आरती का पुण्यार्जन संतोष कुमार किरण कासलीवाल परिवार ने प्राप्त किया। ट्रस्ट के अध्यक्ष प्रकाश चन्द जैन चांदवाड़ एवं मंत्री राजेन्द्र कुमार जैन काला ने बताया कि विधानाचार्य पंडित दीपक जी शास्त्री के मंत्रोच्चार एवं संगीतकार पवन बड़जात्या एवं पार्टी की मधुर आवाज में उत्तम मार्दव धर्म की पूजा भक्ति भाव से श्रद्धालुओं द्वारा की गई। महाआरती के पश्चात उत्तम मार्दव धर्म पर श्री दिगम्बर जैन श्रमण संस्कृति संस्थान सांगानेर की गरिमा व रीतिका जैन बालिकाओं ने प्रवचन किए। श्री दिगंबर जैन चन्द्रप्रभु महिला मंडल दुगार्पुरा की अध्यक्ष श्रीमती रेखा लुहाड़िया एवं मंत्री श्रीमती रानी सोगानी ने बताया कि सांस्कृतिक कार्यक्रम में श्री दिगम्बर जैन चन्द्रप्रभु महिला मंडल दुगार्पुरा जयपुर द्वारा नाटक हृदय परिवर्तन राजा श्रेणिक चेलना प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्रीमती इन्दिरा देवी जी, रोबिन कुमार बाकलीवाल परिवार इन्द्र सदन व दिनेश श्रीमती कुसुम टोंग्या गोकुल वाटिका एवं दीप प्रज्वलन कर्ता श्रीमती सुनीता , श्रेयांस कासलीवाल परिवार थे।

अकलंक महाविद्यालय में रजत जयन्ती समारोह एवं फ्रेशर डे का आयोजन

कोटा. शाबाश इंडिया

अकलंक महाविद्यालय की स्थापना के 25 वर्ष पूर्ण होने पर रजत जयन्ती महोत्सव का आयोजन धूमधाम से किया गया। साथ ही नावगंतुक विद्यार्थियों के लिए प्रवेशोत्सव कार्यक्रम भी मनाया गया। कार्यक्रम का शुंभारभ मुख्य अतिथि कुलपति महोदया प्रो. नीलिमा सिंह एवं विशिष्ट अतिथि प्रो. आर.के.उपाध्याय ने माँ सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलन के साथ किया।

कनिष्का शर्मा ने ईश वन्दना की आकर्षक प्रस्तुति दी। इसके बाद कनिष्का एवं समूह ने स्वागत नृत्य प्रस्तुत किया। स्वागत शुंखला में मुख्य अतिथि प्रो. नीलिमा सिंह कुलपति कोटा विश्वविद्यालय तथा कुलसचिव आर. के उपाध्याय का महाविद्यालय के प्राचार्य तथा अकलंक एसोसिएशन के समस्त सदस्यों ने ओपर्णा पहना कर स्वागत किया। तथा अकलंक विद्यालय एसोसिएशन के सचिव राकेश जैन ने शब्द गुच्छ द्वारा विशिष्ट अतिथियों का सम्मान किया। कुलपति ने समारोह में रजत जयन्ती स्मारिका ह्यप्रतिबिंबह्न का विमोचन किया। यह पत्रिका महाविद्यालय के गौरवशाली 25 वर्ष की गाथा का संस्मरण और विद्यार्थियों, शिक्षकों और संस्थान के समस्त प्रशासकीय तथा गैर प्रशासकीय विभाग की कड़ी मेहनत और समर्पण का प्रतिफलन है। कुलपति ने अपने संबोधन में कहा कि अकलंक महाविद्यालय के लिए यह अत्यन्त गौरव का विषय है कि यह अपना रजत जयन्ती पर्व मना रहा है। उन्होने महाविद्यालय के कुलाधिपति पदक एवं स्वर्ण पदक प्राप्त विद्यार्थियों को बधाई दी। कुलसचिव ने अपने सम्बोधन में कहा कि अकलंक महाविद्यालय आज कोटा के प्रतिष्ठित महाविद्यालयों में अपना उच्च स्थान रखता है। इस अवसर विद्यार्थियों द्वारा रंगारग सांस्कृतिक कार्यक्रम नृत्य नाटिका, गुजराती, कालबेलिया नृत्य तथा फ्रेशर्स डान्स की मनमोहक प्रस्तुति दी। यश प्रताप सिंह को मिस्टर फ्रेशर तथा दिया सोनी को मिस फ्रेशर चुना गया। निर्णायक गण में सिद्धिका जोशी और अंकित सांवला रहे। प्राचार्य डॉ. ललित कुमार शर्मा ने अपने सम्बोधन में महाविद्यालय के 25 वर्ष पूर्ण होने पर सभी को बधाई दी। इस कार्यक्रम में महाविद्यालय के पूर्व विद्यार्थियों को भी आमंत्रित किया गया तथा साथ ही पूर्व विधार्थियों में से जो उद्यमी हैं, उन्हे स्टाल एवं फ्लेक्स के माध्यम से अपने व्यापार को प्रोमोट करने का अवसर प्रदान किया गया। पूर्व विधार्थियों ने अपने संस्मरण नवागंतुक विद्यार्थियों से साझा किए। कार्यक्रम के अंत में डॉ. तनु राजपाल ने धन्यवाद ज्ञापित किया। उक्त समस्त राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी पारस जैन पार्श्वमणी कोटा ने प्रदान की।